अशोक के धम्म का नैतिक तथा सामाजिक समरसता के पक्ष में पहलुओं का विश्लेषण

Dr. Rajkumar, Assistant Professor, Department of History, Seth G.L. Bihani S.D. Post Graduate, Sriganganagar

सारांश

सम्राट अशोक का धम्म न केवल एक धार्मिक अवधारणा थी, बल्कि एक व्यावहारिक नैतिक और सामाजिक दर्शन भी था, जो तत्कालीन समाज में नैतिकता, सह-अस्तित्व और सामाजिक समरसता की भावना को सुदृढ़ करने का प्रयास था। कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक ने हिंसा का त्याग कर धम्म को जीवन का आधार बनाया, जिसमें करुणा, अहिंसा, सत्य, संयम, और सहिष्णुता जैसे नैतिक मूल्यों को प्रमुखता दी गई।

धम्म का उद्देश्य केवल बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था, बल्कि यह विभिन्न वर्गों, धर्मों और जातियों के मध्य आपसी सद्भाव, सम्मान और संवाद को बढ़ावा देना था। अशोक के धम्म में पारिवारिक संबंधों, माता-पिता और गुरुजनों के प्रति कर्तव्य, सेवकों के प्रति सहानुभूति, प्रजा की भलाई तथा सभी प्राणियों के प्रति दया जैसे सामाजिक सरोकार शामिल थे।

उसने अपने शिलालेखों और अभिलेखों के माध्यम से धम्म का प्रचार किया, और 'धम्ममहामात्त' जैसे पदाधिकारियों की नियुक्ति कर यह सुनिश्चित किया कि सामाजिक स्तर पर नैतिक व्यवहार और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा मिले।

इस प्रकार, अशोक का धम्म एक ऐसा नैतिक-सामाजिक दर्शन था, जो भिन्न विचारधाराओं के बीच समरसता स्थापित कर, एक शांतिपूर्ण और समृद्ध समाज की स्थापना की ओर अग्रसर था। यह भारतीय इतिहास में नैतिक शासन और सामाजिक समरसता का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: अशोक, धम्म, नैतिकता, सामाजिक समरसता, अहिंसा, शिलालेख, धम्ममहामात्त।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY